उत्तर प्रदेश में FDI वृद्धि

चर्चा में क्यों?

उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार, वर्ष **2019 से 2023** के दौरान प्रदेश में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)** में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

मुख्य बिंदु

- **ऐतिहासिक चुनौतियाँ:** ऐतिहासिक रूप से, उत्तर प्रदेश एक खराब औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र से जूझता रहा है, जिसने विदेशी निवेशकों को हतोत्साहित किया है। इसके लिये कई कारक ज़िम्मेदार थे, जिनमें शामिल हैं:
  - **व्यापार सुगमता** में निम्न रैंकिंग
  - एकीकृत **सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम** का अभाव
  - अपर्याप्त **बुनियादी ढाँचा**
  - अस्पष्ट औद्योगिक नीतियाँ
  - अस्थिर **कानून-व्यवस्था** की स्थिति
- **FDI प्रवृत्तियों में बदलाव**: वर्ष **2000 से 2017** तक उत्तर प्रदेश में FDI मात्र **3,000 करोड़ रुपए** तक सीमित था, किंतु हाल के वर्षों में इसमें तीव्र वृद्धि हुई है।
  - अब उत्तर प्रदेश FDI के लिये भारत का **11वाँ सबसे आकर्षक राज्य** है। **अक्तूबर 2019 से सितंबर 2024** तक राज्य में कुल **1.7 अरब डॉलर** का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ है।
- **उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात** में उत्तर प्रदेश भारत में **प्रथम स्थान** पर है। वर्तमान में राज्य में **196** **इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिज़ाइन और विनिर्माण (ESDM)** कंपनियाँ संचालित हैं।
- **प्रमुख नीतिगत सुधार** :
  - वर्ष **2018 में आयोजित** **UP इन्वेस्टर्स समिट** ने निवेश-हितैषी पहलों के लिये मंच तैयार किया।
    - इस समिट में 4.28 लाख करोड़ रुपए मूल्य के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए।
  - इस सफलता के आधार पर वर्ष 2023 में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (GIS) में 33.50 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए।
- **प्रमुख नीतियाँ:**
  - उत्तर प्रदेश प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) फॉर्च्यून ग्लोबल 500 और फॉर्च्यून इंडिया 500 कंपनियों के निवेश संवर्द्धन हेतु नीति-2023
  - उत्तर प्रदेश औद्योगिक निवेश एवं रोज़गार संवर्द्धन नीति 2022
  - उत्तर प्रदेश ग्रीन हाइड्रोजन नीति 2024
  - उत्तर प्रदेश वैश्विक क्षमता केंद्र नीति 2024
- **परियोजना कार्यान्वयन:**
  - उत्तर प्रदेश सरकार ने **ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनीज़ (GBCs)** की अवधारणा शुरू की।
    - ये आयोजन राज्यव्यापी बड़े निवेश परियोजनाओं के शुभारंभ के मंच होते हैं।
  - अब तक हुई पहली चार GBCs में 16,000 से अधिक परियोजनाओं की शुरुआत हो चुकी है, जिनमें से 8,000 से अधिक परियोजनाएँ क्रियाशील हैं।
  - **आगामी GBC-5** के लिये राज्य सरकार ने 5 लाख करोड़ रुपए की परियोजनाओं के ग्राउंडिंग का लक्ष्य रखा है, जिसे बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपए तक किया जा सकता है।
  - कुल निवेश का अधिकांश भाग **विनिर्माण**, **सेवा** **और अवसंरचना क्षेत्रों** में गया है, जिसमें **विनिर्माण क्षेत्र** को सर्वाधिक **62.25%** का

हस्सिा प्राप्त हुआ है।

FDI और FPI

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

FDI:
- किसी दूसरे देश में स्थित व्यवसायों और संपत्तियों में विदेशी संस्थाओं/व्यक्तियों द्वारा किया गया निवेश

FDI के अंतर्वाह हेतु मार्ग :
- स्वचालित मार्ग:
  - किसी पूर्व सरकारी स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है
  - गैर-महत्वपूर्ण क्षेत्रों में 100% तक की अनुमति
- सरकारी मार्ग:
  - कुछ क्षेत्रों में या विशिष्ट सीमा से ऊपर के निवेश के लिये आवश्यक
  - उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) और RBI द्वारा प्रशासित

स्वचालित और सरकारी रूट के माध्यम से स्वीकृति के उदाहरण:
- बैंकिंग (निजी क्षेत्र): 49% तक (स्वायत्त) + 49% से ऊपर और 74% तक (सरकारी)
- रक्षा: 74% तक (स्वायत्त) + 74% से अधिक (सरकारी)
- हेल्थकेयर (ब्राउनफील्ड): 74% तक (स्वायत्त) + 74% से ऊपर (सरकारी)
- दूरसंचार सेवाएँ: 49% तक (स्वायत्त) + 49% से अधिक (सरकारी)

विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (FIPB):
- वित्त मंत्रालय के अंतर्गत आता है
- FDI प्रस्तावों को संसाधित करने के लिये ज़िम्मेदार - विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (FIFP) द्वारा सुविधा प्रदान की गई
- सरकार की मंज़ूरी के लिये सिफारिशें करना

भारत (चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान, भूटान, नेपाल, म्याँमार और अफगानिस्तान) के साथ भूमि सीमा साझा करने वाले देशों से FDI के लिये सरकार की पूर्व स्वीकृति अनिवार्य है।

भारत के शीर्ष 5 FDI स्रोत (वित्त वर्ष 2022-23):
- मॉरीशस
- सिंगापुर
- अमेरिका
- नीदरलैंड
- जापान

FDI आकर्षित करने वाले भारत के शीर्ष क्षेत्र (वित्त वर्ष 2022-23):
- सेवा क्षेत्र
- कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर
- व्यापार
- दूरसंचार
- ऑटोमोबाइल उद्योग

विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI)

FPI:
- वित्तीय संपत्तियों में विदेशी व्यक्तियों, संस्थानों या निधियों द्वारा किये गए निवेश
- फ्लाई बाय नाइट या हॉट मनी के नाम से जाना जाता है

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ:
- स्वामित्व प्राप्त किये बिना वित्तीय संपत्तियों की खरीद होती है
- निष्क्रिय निवेश दृष्टिकोण
- निवेशक लाभांश, ब्याज और पूंजी वृद्धि के माध्यम से रिटर्न अर्जित करते हैं

उदाहरण:
- स्टॉक, बॉण्ड आदि।

नियामक संस्था:
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI)

FDI और FPI के बीच अंतर

विशेषताएँ	FDI	FPI
निवेश की प्रकृति	दीर्घकालिक	अल्पकालिक
उद्देश्य	दूसरे देश में दीर्घकालिक निवेश	निवेश पर त्वरित रिटर्न अर्जित करना
नियंत्रण	महत्वपूर्ण (निवेशित इकाई पर)	नहीं या सीमित नियंत्रण
निवेश	मूर्त संपत्ति (जैसे, कारखाने, भवन)	वित्तीय संपत्ति (जैसे, स्टॉक, बॉण्ड)
रिटर्न्स	लाभ, लाभांश और पूंजी अभिमूल्यन	लाभांश, ब्याज, और पूंजी अभिमूल्यन
नीति विनियम	सरकार की नीतियाँ और क्षेत्र-विशिष्ट नियम	लचीले नियम और आसान प्रवेश/निकास
अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	रोज़गार सृजन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और आर्थिक विकास	अल्पकालिक तरलता प्रदान करता है और शेयर बाज़ार को प्रभावित करता है

Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/fdi-growth-in-uttar-pradesh